20/2/67 रात्रि क्लास :– मुरली जो मिस होती है वो यहाँ आकर सुननी चाहिए। बुद्धि में यह रहता है कि हमको भगवान पढ़ाते हैं; क्योंकि राजयोग है ना। एम–ऑब्जेक्ट है। भविष्य 21 जन्म लिए राजाई मिलती है। तो कौन मूर्ख होगा जो 21 जन्मों का वर्सा नहीं लेगा। बाप तो कहेंगे ना यह तो मूर्ख हैं, पढ़ते नहीं हैं। भगवान पढ़ाते हैं फिर भी जो नहीं पढ़ते हैं तो वो महान कम्बख्त हुए ना। यह ल०ना० बख्तर हैं ना। इनके (आगे तो) सब कंगाल हैं। तुम ब्राह्मण ही सबसे साहुकार हो। फिर भी सुखधाम में जाते हो ना। भारतवासी कोई सब स्वर्गवासी नहीं बनते हैं। ऐसे बहुत होंगे जो स्वर्ग देखेंगे भी नहीं। तो कितना पुरुषार्थ करना चाहिए आगे जाने लिए। वहाँ कितना सुख है। अकाले मृत्यु नहीं होती। उनका भोजन आदि कितना पवित्र होता है। जो अच्छी रीति पढ़ेंगे और दैवीगुण धारण करेंगे तो सतयुग में आवेंगे। आजकल जो भी मनुष्य मात्र हैं (सब) हैं कुसंगी। अब तुम बच्चों को संग मिला है बाप का। तुम ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ कहलाते हो तो भी पत्थर बुद्धि पूछते नहीं हैं कि तुम इतने ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ हो तो ज़रूर प्रजापिता ब्रह्मा भी होगा। ज़रूर इनको बाप से वर्सा मिलता होगा। पूछना चाहिए ना ब्रह्मा बाबा की बायोग्राफी क्या है? लगा हुआ है ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ, तो पूछना चाहिए ना ब्रह्मा है कौन? अरे, यह तो प्रजापिता ब्रह्मा है जिससे शिवबाबा आकर ब्राह्मण कुल रचते हैं। यह ब्राह्मण गाए हुए हैं। भक्तिमार्ग वाले ब्राह्मण भी गाते हैं ब्रह्मा देवी–देवताय नमः। ब्राह्मणों को भी तुम समझाए सकते हो। प्रजापिता ब्रह्मा तो है ही ग्रेट–2 ग्रैंड फादर। शिव को तो सिर्फ फादर कहेंगे। मनुष्यों को तो कुछ भी (पता) नहीं है। बच्चे जानते हैं वो बाप है, टीचर है तो कितना अच्छा पढ़ना चाहिए। बाप सिर्फ कहते हैं

3 20/2/67

मुझे याद करने से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। तुम बच्चों की बुद्धि में यह भी है कैसे हमने 84 जन्म लिए हैं। बीज को याद करने से सारा झाड़ याद आ जाता है। यह वैराइटी धर्मों का झाड़ है। यह सिर्फ तुम्हारी बुद्धि में ही है। यह भी तुम जानते हो वो है भक्तिमार्ग के सब शास्त्र। उनसे दुर्गति ही होती है। उतरते आए हैं ना! भारत गोल्डन एज में था, अब आयरन एज में है। यह अंग्रेजी अक्षर अच्छे हैं। इनका अर्थ अच्छा निकलता है। आत्मा सच्चा सोना होता है फिर उसमें खाद पड़ जाती है। अब बिल्कुल झूठा हो गया है। इनको कहा ही जाता है आयरन एज्ड आत्माएँ। सोना आयरन एज्ड होने से जेवर भी वैसा हो जाता है। अब बाप ने युक्ति बताई है मुझे याद करो। मैं ही पतित–पावन हूँ। माम् एकम् याद करो। तुम्हीं मुझको बुलाते हो हे पतित–पावन आओ। मैं कल्प–2 आकर तुमको यह युक्ति बताता हूँ। मनमनाभव। मुझे याद करो। मद्याजीभव अर्थात् स्वर्ग के मालि(क) बनो। बाप कितनी युक्तियाँ बताते रहते हैं। कोई कहते हैं हमको योग में बहुत मज़ा आता है। बस, योग करके यह भागे। योग ही अच्छा लगता है। कहते, हमको तो शांति चाहिए। अच्छा, तो बाप को तो कहीं भी बैठकर याद करो। याद करते–2 तुम शांतिधाम चले जावेंगे। इसमें योग सिखाने की बात ही नहीं है। बाप को याद करना है ना। ऐसे बहुत सेन्टर्स पर जाकर आधा–पौना घंटा बैठते हैं कि हमको नेष्टा कराओ। वो तो कहेंगे बाबा ने प्रोग्राम दिया है नेष्टा का। यहाँ बाबा कहते हैं चलते–फिरते याद करते रहो। ना से तो यह बैठना भी अच्छा है। बाबा मनाह नहीं करते हैं। भले सारी रात बैठो; परन्तु ऐसे आदत नहीं डालनी है कि बस, रात को ही याद करे। आदत यह डालनी है, काम–काज करते हुए याद करते रहना है। इसमें बड़ी मेहनत है। बुद्धि बार–2 और तरफ भाग जाती है। भक्तिमार्ग में भी बुद्धि भाग जाती है। फिर अपने को चिउटरी पहनते हैं। सच्चे भक्त जो होते हैं उनकी बात करते हैं। तो यहाँ भी अपने साथ ऐसी बात करनी चाहिए। बाबा को क्यों नहीं याद किया? याद नहीं करेंगे तो विश्व के मालिक ही कैसे बनेंगे। यह जैसे कि अपने को सज़ा देनी होती है। वो आशिक–माशूक तो नाम–रूप में फँसे रहते हैं। यहाँ तो तुम अपने को आत्मा समझ कर बाप को याद करते हो। हम आत्मा इन शरीर से अलग है। शरीर में आने से कर्म करना

होता है। बहुत ऐसे हैं जो कहते हैं कि योग में बिठाओ। हम दीदार करें। अब दीदार क्या करेंगे? वो तो बिन्दी है ना! अच्छा, कोई कहते हैं कृष्ण का दीदार करें। कृष्ण की तो मूर्ति भी है ना। जो जड़ है सो फिर चेतन में देखेंगे। इससे फायदा ही क्या होगा? सा० से फायदा क्या होगा? देखने से थोड़े ही फायदा होगा। तुम बाप को याद करो तो आत्मा पवित्र बने। नारायण का सा० होने से नारायण थोड़े ही बन जावेंगे। तुम जानते हो हमारी एम–ऑब्जेक्ट ही है लक्ष्मी बनना; परन्तु पढ़ने बिना थोड़े ही बनेंगे। पढ़कर साहुकार बनो। प्रजा भी बनाओ तब ही लक्ष्मी बनोगी। मेहनत है। पास विथ ऑनर होना चाहिए जो कि धर्मराज की सज़ा ना मिले। यह मुरब्बी बच्चा भी साथ में है। यह भी कहते हैं तुम तीखे जा सकते हो। बाबा के ऊपर तो कितना बो... है। सारा दिन कितना खयालात करनी पड़ती है। हम इतनी याद नहीं कर सकता हूँ। भोजन पर थोड़ा याद रहती फिर भूल जाते हैं। खेल करता हूँ तो समझता हूँ कि बाबा और हम दोनों खेल करते हैं। बाबा को भूल जाता हूँ खेल करते–2। त्रिरकणी वस्तु है ना। बार–2 याद खिसक जाती है। इसमें बहुत मेहनत है। याद से ही आत्मा प्योर होनी है। बहुतों को पढ़ावेंगे तो ऊँच पद पावेंगे। जो अच्छा समझते हैं वो अच्छा पद पाते हैं। प्रदर्शनी में कितनी प्रजा बनती है। तुम एक–2 लाखों की सेवा करेंगे और फिर अपनी भी अवस्था अच्छी चाहिए। कर्मातीत अवस्था हो जावेगी तो शरीर नहीं रहेगा। आगे चल तो समझेंगे अब लड़ाई ज़ोर हो जावेगी। फिर बहुत सारे तुम्हारे पास आते रहेंगे। महिमा बढ़ती जावेगी। अंत में संयासी भी आवेंगे। बाप को याद करने लग पड़ेंगे। उनका पार्ट ही मुक्तिधाम में जाने का है। नॉलेज तो लेंगे नहीं। अख़बारों द्वारा भी बहुत सुनेंगे। कितने गाँव हैं। सबको पैगाम देना है। ओम।